NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

वैज्ञानिक विधि से लौकी की उन्नति खेती के फायदे

*शेफाली चौधरी, श्वेता वर्मा, डॉ. आस्तिक झा

परिचय:

लौकी को कैलाबाश के नाम से जाना जाता है और यह कुकुरबिटेशियाई फैमिली से संबंधित है। यह एक वार्षिक फल देने वाला पौधा है, जिसकी बढ़वार अधिक होती है। इसके पौधे के फूल सफेद रंग के होते हैं जो गुद्देदार और बोतल के आकार के फल देते हैं। इसके फल का उपयोग सब्जी के तौर पर किया जाता है। लौकी के शारीरिक फायदे भी हैं। यह पाचन प्रणाली को अच्छा करता है, शूगर के स्तर और कब्ज को कम करता है। अनिद्रा और मूत्र संक्रमण का इलाज करता है और अनिद्रा उपचार के लिए अच्छा उपाय है।

खेती कर रहे हैं और उन्हें साल में तीन बार फसल मिल रही है, जिससे उन्हें अच्छा मुनाफा हो रहा है। इस सब्जी की खेती जायद, खरीफ, और रबी सीजन में की जा सकती है। देश में मचान विधि की व्यापकता है, जो बेल वाली सब्जियों के लिए अत्यंत प्रभावी मानी जाती है और किसानों को यहां तक तकनीकी सहायता प्रदान करती है। भारत में सबसे अधिक लौकी का उत्पादन बिहार में होता है, और इसके अलावा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, और छत्तीसगढ़ में भी इसकी खेती बड़े पैमाने पर की जाती है।

लौकी एक ऐसी सब्जी है जो विटामिन सी और जिंक का प्रमुख स्रोत होती है, जिससे त्वचा को कई लाभ प्राप्त हो सकते हैं। किसान वैज्ञानिक तकनीक से लौकी की

उपयुक्त जलवायु

लौकी की खेती के लिए गर्म एवं आर्द्र जलवायु सर्वोत्तम है। लौकी के पौधे अधिक ठंड को सहन नहीं कर

***शेफाली चौधरी** शोध छात्रा, (सब्जी विज्ञान विभाग)
श्वेता वर्मा शोध छात्रा, (सब्जी विज्ञान विभाग)
डॉ. आस्तिक झा (एसोसिएट प्रोफ़ेसर)
उद्यान विज्ञान विभाग
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या

सकते हैं। करीब 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान में पौधों का विकास बेहतर होता है।

मिट्टी

लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी एवं जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी सबसे उपयुक्त है। मिट्टी का पी.एच. स्तर 6 से 7 के बीच होना चाहिए। मिट्टी की जल धारण करने की क्षमता अधिक होनी चाहिए। जलजमाव वाले क्षेत्रों में लौकी की खेती करने से बचें। इसके साथ ही पथरीली भूमि भी लौकी की खेती के लिए उपयुक्त नहीं है।

खेत की तैयारी

खेत को तैयार करने के लिए 2 से 3 बार जुताई करें। जुताई के बाद खेत में पाटा लगाकर खेत की मिट्टी को समतल एवं भुरभुरी बना लें। खेत तैयार करते समय प्रति एकड़ खेत में बेसल डोज के तौर पर 70 किलोग्राम एनपीके 10:26:26 खाद के साथ 25 किलोग्राम यूरिया, 12 किलोग्राम सल्फर एवं 4 किलोग्राम 'देहात स्टार्टर' का प्रयोग करें। खेत में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें।

उन्नति किस्में

लौकी की उपज इसकी किस्मों पर निर्भर करती है। लम्बी आकर की लौकी की किस्में पंजाब कोमल, पंजाब बरकत, पंजाब बहार एवं गोल आकार की किस्में पूसा समर, प्रोलिफिक राउण्ड, पूसा मंजरी, पंजाब राउण्ड आदि किस्मों का चयन कर सकते हैं।

लौकी की किस्मों का चयन अपने क्षेत्र के अनुसार करें। इसकी अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए 'देहात डी.एच.एस 2200', 'देहात डी.एच.एस 2202' एवं 'देहात डी.एच.एस 2210' किस्मों का चयन करें। इसके अलावा आप आइरिस हाइब्रिड F1 लौकी, सरपन F1 हाइब्रिड लौकी-55, आइरिस राउंड मुमताज F1 लौकी, जेंटेक्स शुभांगी (आरएसटी 1103), टीम सीड्स लड्डू F1 हाइब्रिड, आइरिस झंकार F1 लौकी, शाइन ब्रांड जूली F1 लौकी, आइरिस हजारी 04 F1 लौकी, आदि किस्मों का भी चयन कर सकते हैं।

बुवाई का समय

इसकी खेती जायद और खरीफ दोनों मौसम में सफलतापूर्वक की जा सकती है। गर्मी के मौसम में फसल प्राप्त करने के लिए जनवरी से मार्च के बीच इसकी बुवाई की जाती है। वर्षा ऋतु में फसल प्राप्त करने के लिए बीज की बुवाई जून-जुलाई महीने में की जाती है। वहीं पहाड़ी क्षेत्रों में मार्च-अप्रैल महीने में इसकी बुवाई करनी चाहिए।

बीज की मात्रा एवं बीज उपचार

बीज की मात्रा विभिन्न किस्मों के अनुसार कम या अधिक हो सकती है। सामान्य तौर पर प्रति एकड़ खेत के लिए 300-350 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई से पहले प्रति किलोग्राम बीज को 2.5 ग्राम कार्बेन्डाजिम 12% + मैंकोजेब 63% डब्ल्यूपी (देहात-साबू) से उपचारित करें। इससे फसल को आर्द्रगलन रोग से बचाया जा सकता है।

बुवाई की विधि

बेहतर उपज प्राप्त करने के लिए लौकी की बुवाई कतारों में करें। सभी कतारों के बीच 6 फीट की दूरी रखें। पौधों से पौधों के बीच करीब 2.5 फीट की दूरी होनी चाहिए। बीज की बुवाई 1 से 2 सेंटीमीटर की गहराई में करें।

उर्वरक प्रबंधन

अच्छी तरह से गली हुई रूड़ी की खाद 20-25 टन प्रति एकड़ में डालें। नाइट्रोजन 28 किलो (यूरिया 60 किलो) प्रति एकड़ में डालें। नाइट्रोजन 14 किलो (यूरिया 30 किलो) की पहली मात्रा को बिजाई के समय प्रति एकड़ में डालें और नाइट्रोजन 14 किलो (यूरिया 30 किलो) को पहली तुड़ाई के समय प्रति एकड़ में डालें।

इससे पौधों में मादा फूलों की संख्या बढ़ाने में मदद मिलती है। पौधों में फूल आने के समय 5 ग्राम एमकेपी 00.52.34 (देहात न्यूट्रीवन- मोनो पोटैशियम फॉस्फेट) + 1 ग्राम चिलेटेड बोरोन का छिड़काव करें। फसल के विकास में आने पर प्रति लीटर पानी में 2 मिलीलीटर देहात बूस्ट मास्टर का छिड़काव करें। लौकी के फलों की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए प्रति लीटर पानी में 1 ग्राम चिलेटेड कैल्शियम + 1 ग्राम बोरोन 20% का छिड़काव करें।

2G और 3G कटिंग

लौकी की फसल में 2G और 3G कटिंग के कारण पौधों में मादा फूलों की संख्या बढ़ जाती है। जिससे पौधे से अधिक फल प्राप्त किए जा सकते हैं। 2G कटिंग में पौधों की शाखाएं एक मीटर लम्बी हो जाने पर उसके ऊपरी हिस्से को काट दिया जाता है। जिससे वह अधिक लम्बी न हो पाएं। पौधों में इस प्रक्रिया के बाद दूसरी पीढ़ी की शाखाएं निकलती है और पहली पत्ती के पास मादा फूल बनने लगते हैं। पहली पीढ़ी की शाखाओं में केवल नर फूल निकलते हैं जिससे फल नहीं बन पाते हैं। दूसरी पीढ़ी की शाखाओं में 3G कटिंग की जाती है। जिससे तीसरी पीढ़ी की शाखा निकलती है। इससे प्रत्येक पत्ती के पास मादा फूल खिलते हैं। 3G कटिंग के लिए कम से कम 20 से 30 दिन पुराने पौधे का चयन करें।

सिंचाई प्रबंधन

उचित सिंचाई प्रबंध के द्वारा हम लौकी की उपज में वृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। लौकी की सिंचाई मिट्टी में मौजूद नमी के अनुसार करनी चाहिए। बीज के अंकुरित होने तक खेत में नमी बनाए रखें। यदि नर्सरी में तैयार किए गए पौधों की रोपाई कर रहे हैं तो रोपाई के बाद हल्की सिंचाई जरूर करें। वर्षा के मौसम में फसल में अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। वर्षा के मौसम में सप्ताह में 1 बार सिंचाई करें। वहीं गर्मी के मौसम में 3 से 4 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें। खेत में जल जमाव के कारण फसलों में गलन होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए जल निकासी की उचित व्यवस्था करें।

खरपतवार प्रबंधन

लौकी की फसल में खरपतवारों को पनपने से रोकने के लिए बुवाई से पहले खेत में गहरी जुताई करें। इससे खेत में पहले से मौजूद खरपतवार नष्ट हो जाएंगे। इसके साथ ही फसल चक्र अपनाएं। पौधों के विकास की शुरूआती अवस्था में 2-3 बार निराई-गुड़ाई करें। लौकी में खरपतवार नियंत्रण करने के लिए बुवाई के 48 घंटे के अंदर 600 मिलीलीटर पेंडिमेथालिन 38.7% सीएस (बीएएसएफ- स्टॉम्प एक्स्ट्रा, यूपीएल- दोस्त सुपर, टाटा रैलिस- पैनिडा ग्रांडे, SWAL- पैंडोरा) की मात्रा प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

रोग एवं कीट प्रबंधन

लौकी की फसल में गलका रोग, चूर्णिल आसिता रोग, मृदुरोमिल आसिता रोग, गमोसिस रोग, फल सड़न रोग, मोजैक वायरस रोग, स्पाइडर माइट, सफेद मक्खी, जैसे रोगों एवं कीटों का प्रकोप अधिक होता है। इन कीट एवं रोगों के कारण लौकी की पैदावार में भारी कमी हो सकती है। इसके साथ ही फसल की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। किसी भी रोग या कीट के लक्षण नजर आने पर उचित दवाओं का प्रयोग करें।